JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति: एक संबंधात्मक अध्ययन

श्वेता सिंह 'आँसू' (शोधार्थी)
डॉ० मीना कुमारी (प्राध्यापिका)
शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

**सार**

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। अध्ययन में लिंग (छात्र एवं छात्राएँ) तथा संस्थान की प्रकृति (सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालय) के संदर्भ में उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। उत्तर प्रदेश के लखनऊ, वाराणसी एवं प्रयागराज जिलों के सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत 300 श्रवण बाधित विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन तकनीक द्वारा किया गया।

अध्ययन में उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी (प्रतिभा देव एवं आशा मोहन, 2012) तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी (कुप्पुस्वामी, 2024) का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया।

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि श्रवण बाधित छात्रों, सरकारी विशेष विद्यालयों तथा गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। इसके विपरीत श्रवण बाधित छात्राओं में धनात्मक किंतु सांख्यिकीय रूप से असार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। निष्कर्षतः सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, किन्तु यह इसका एकमात्र निर्धारक नहीं है।

***मुख्य शब्दः विशेष शिक्षा, श्रवण बाधित विद्यार्थी, उपलब्धि अभिप्रेरणा, सामाजिक– आर्थिक स्थिति।***

**प्रस्तावना**

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक समायोजन का आधार भी है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों, विशेषकर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास अत्यंत आवश्यक माना जाता है, क्योंकि यही उन्हें शैक्षिक उपलब्धियों, आत्मविश्वास तथा जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है। इनमें सामाजिक–आर्थिक स्थिति एक महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि परिवार की आर्थिक क्षमता, शिक्षा का स्तर, व्यवसाय, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता तथा सामाजिक समर्थन विद्यार्थियों के सीखने के अवसरों एवं प्रेरणा को प्रभावित करते हैं। श्रवण बाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में यह प्रभाव और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें सहायक उपकरणों, विशेष शिक्षण सामग्री, पुनर्वास सेवाओं एवं अतिरिक्त शैक्षिक सहयोग की आवश्यकता होती है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन में उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. लिंग के संदर्भ में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध ज्ञात करना।
2. संस्थान की प्रकृति के संदर्भ में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध ज्ञात करना।

**परिकल्पनाएँ**

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है:

$H_01$ : श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है।

$H_02$ : श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है।

$H_03$ : सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति मध्य कोई संबंध नहीं है।

$H_04$ : गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है।

**शोध विधि** : इस अध्ययन के लिए शोधार्थी ने वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

**न्यादर्श :** प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने **यादृच्छिक न्यादर्श चयन तकनीक** का उपयोग किया है। इस अध्ययन के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ, वाराणसी एवं प्रयागराज जिले के सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत 300 श्रवण बाधित विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है।

**प्रयुक्त शोध उपकरण**

1. **उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी :** इस मापनी का निर्माण प्रो. प्रतिभा देव एवं डॉ. आशा मोहन द्वारा 2012 में किया गया। यह मापनी विद्यार्थियों की उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा, सफलता की आकांक्षा, लक्ष्य के प्रति समर्पण तथा कार्य के प्रति लगन को मापने हेतु विकसित की गई है।
2. **सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी :** विद्यार्थियों के परिवार की आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति जानने हेतु 'सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी' का निर्माण

बी. कुप्पुस्वामी ने 2024 में किया। सामाजिक–आर्थिक स्थिति के निर्धारण हेतु तीन मुख्य आधारों का उल्लेख किया गया है: शिक्षा, व्यवसाय तथा मासिक आय।

## आंकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या एवं विवेचना

**$H_01$ : श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है।**

तालिका 1:श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सहसंबंध

| चर | N | स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (p) | सार्थकता मान |
|---|---|---|---|
| उपलब्धि अभिप्रेरणा | 150 | **0.3206** | 0.00006354 |
| सामाजिक–आर्थिक स्थिति | 150 | | |

स्वतंत्रता अंश (df) = 148

प्राप्त परिणामों के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सहसंबंध गुणांक (p) का मान 0. 3206 प्राप्त हुआ। सहसंबंध गुणांक का यह मान धनात्मक दिशा को प्रदर्शित करता है। इसका अर्थ यह है कि श्रवण बाधित छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में वृद्धि होने के साथ–साथ उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में भी वृद्धि देखने को मिलती है। दूसरे शब्दों में, जिन छात्रों को बेहतर सामाजिक एवं आर्थिक सुविधाएँ, पारिवारिक सहयोग, शैक्षिक संसाधन तथा अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है, उनमें अधिगम, लक्ष्य प्राप्त करने और शैक्षिक उपलब्धि हासिल करने की अभिप्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।

सहसंबंध गुणांक 0.3206 यह दर्शाता है कि दोनों चरों के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक संबंध प्राप्त हुआ है। यह संबंध अत्यधिक उच्च नहीं है, लेकिन इतना अवश्य है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। श्रवण बाधित छात्रों के संदर्भ में सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ विशेष महत्व रखती हैं, क्योंकि परिवार की आर्थिक क्षमता, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, सहायक उपकरणों की उपलब्धता, विशेष शिक्षा संबंधी सुविधाएँ तथा माता–पिता का सहयोग छात्रों के आत्मविश्वास और उपलब्धि की प्रेरणा को प्रभावित कर सकते हैं।

इस सहसंबंध की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच के लिए प्राप्त सार्थकता मान (p मान) का परीक्षण किया गया। अध्ययन में सार्थकता मान 0.00006354 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर के सार्थकता मान से अत्यंत कम है। इसका तात्पर्य है कि प्राप्त सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। स्वतंत्रता अंश (df) = 148 के आधार पर भी यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य पाया गया संबंध केवल संयोग का परिणाम नहीं है, बल्कि दोनों चरों के मध्य वास्तविक संबंध विद्यमान है। अतः शून्य परिकल्पना 'श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है' को अस्वीकार किया जाता है।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि श्रवण बाधित छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा से सकारात्मक एवं सार्थक रूप से संबंधित है। बेहतर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ छात्रों में अधिक आत्मविश्वास, शैक्षिक रुचि और लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा विकसित करने में सहायक हो सकती हैं। इसलिए श्रवण बाधित छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए सामाजिक–आर्थिक सहयोग, पारिवारिक समर्थन तथा उपयुक्त शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।

**विवेचना**

**कोलमैन (1966)** ने अपने अध्ययन 'इक्कैलिटी ऑफ एजुकेशनल ऑपर्चुनिटी' में स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा पर पारिवारिक सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवार अपने बच्चों को बेहतर शैक्षिक संसाधन, अध्ययन के अवसर और अभिभावकीय सहयोग प्रदान करते हैं, जिससे विद्यार्थियों में सफलता प्राप्त करने की इच्छा और उपलब्धि अभिप्रेरणा विकसित होती है। यह निष्कर्ष श्रवण बाधित छात्रों के लिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि उन्हें अतिरिक्त शैक्षिक एवं संचार संबंधी सहायता की आवश्यकता होती है।

**बंडूरा (1986)** के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार, विद्यार्थियों का व्यवहार, अभिप्रेरणा और आत्म–विश्वास उनके सामाजिक परिवेश एवं अनुभवों से प्रभावित होते हैं। जिन छात्रों को परिवार और समाज से सकारात्मक सहयोग प्राप्त होता है, उनमें आत्म–प्रभावकारिता और लक्ष्य प्राप्ति की भावना अधिक विकसित होती है। श्रवण बाधित छात्रों के लिए आर्थिक रूप से सक्षम एवं सहयोगी परिवार उनकी शिक्षा, पुनर्वास सेवाओं और संचार सुविधाओं तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित कर सकते हैं, जिससे उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि हो सकती है।

**एक्लेस एट अल. (1983)** के अपेक्षा–मूल्य सिद्धांत के अनुसार, विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उनकी सफलता की अपेक्षाओं और कार्य के मूल्यांकन से प्रभावित होती है। सामाजिक–आर्थिक रूप से बेहतर परिवार बच्चों में उच्च शैक्षिक आकांक्षाएँ विकसित करते हैं और उन्हें भविष्य के लक्ष्यों के प्रति प्रेरित करते हैं। इस प्रकार, सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के प्रेरक विकास को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकती है।

भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययनों में भी पाया गया है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा से संबंधित होती है। जिन छात्रों को परिवार से पर्याप्त आर्थिक सहायता, अध्ययन सामग्री, तकनीकी संसाधन और अभिभावकीय प्रोत्साहन प्राप्त होता है, उनमें अधिगम के प्रति अधिक रुचि और उपलब्धि प्राप्त करने की इच्छा देखी जाती है। श्रवण बाधित छात्रों के लिए यह प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि सहायक उपकरण, विशेष शिक्षण सामग्री, संचार प्रशिक्षण और अतिरिक्त शैक्षिक सेवाओं के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है।

**वेंट्जेल (1998)** ने बताया कि सामाजिक समर्थन, विशेष रूप से परिवार और शिक्षकों का सहयोग, विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रेरणा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन के अनुसार, जिन छात्रों को सकारात्मक सामाजिक समर्थन प्राप्त होता है, वे शैक्षिक लक्ष्यों के प्रति अधिक प्रतिबद्ध रहते हैं। यह निष्कर्ष श्रवण बाधित छात्रों पर भी लागू होता है, क्योंकि पारिवारिक स्वीकृति और सहयोग उनके आत्मविश्वास एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

अतः उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति श्रवण बाधित छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। आर्थिक एवं सामाजिक रूप से समर्थ वातावरण छात्रों को बेहतर अवसर, संसाधन और प्रेरक अनुभव प्रदान करता है, जिससे उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में सकारात्मक वृद्धि होती है।

यद्यपि अनेक अध्ययनों ने सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सकारात्मक संबंध पाया है, लेकिन कुछ शोध ऐसे भी हैं जिनके निष्कर्ष इस संबंध का पूर्ण समर्थन नहीं करते। इन अध्ययनों के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरणा केवल सामाजिक–आर्थिक स्थिति द्वारा निर्धारित नहीं होती,

बल्कि व्यक्तिगत क्षमता, आंतरिक प्रेरणा, आत्म–प्रभावकारिता, विद्यालयी वातावरण और शिक्षक सहयोग जैसे कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**डेसी – रयान (1985)** के आत्म–निर्धारण सिद्धांत के अनुसार, विद्यार्थियों की प्रेरणा मुख्य रूप से उनकी आंतरिक आवश्यकताओं–स्वायत्तता, योग्यता और सामाजिक जुड़ाव से प्रभावित होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति होने मात्र से विद्यार्थियों में उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा उत्पन्न नहीं होती, जब तक कि उन्हें व्यक्तिगत प्रोत्साहन और मनोवैज्ञानिक समर्थन प्राप्त न हो।

कुछ अध्ययनों में पाया गया कि समान सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों में भी उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर अलग–अलग हो सकता है। इसका कारण विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचि, लक्ष्य अभिविन्यास, आत्मविश्वास और सीखने के प्रति दृष्टिकोण को माना गया है। इस प्रकार, सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा का एक सहायक कारक हो सकती है, लेकिन इसे एकमात्र निर्धारक नहीं माना जा सकता।

**जगताप (2015)** ने उपलब्धि अभिप्रेरणा के पूर्वानुमानक कारकों का अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। अध्ययन में सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित पाया गया। यह निष्कर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता हमेशा उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा में परिवर्तित नहीं होती।

इसी प्रकार, कुछ शोधों में यह पाया गया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षिक प्रेरणा के मध्य संबंध परिस्थितिनिर्भर होता है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों, जैसे श्रवण बाधित छात्रों, में उपलब्धि अभिप्रेरणा पर विद्यालय का समावेशी वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, संचार सुविधाएँ और साथियों का सहयोग अधिक प्रभाव डाल सकते हैं। यदि विद्यालयी वातावरण सहयोगी हो, तो निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले छात्र भी उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रदर्शित कर सकते हैं।

अतः विरोधी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य संबंध सार्वभौमिक नहीं है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों को अवसर और संसाधन उपलब्ध करा सकती है, परंतु उपलब्धि अभिप्रेरणा के निर्माण में व्यक्तिगत एवं सामाजिक–मनोवैज्ञानिक कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

**$H_0 2$ : श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है।**

तालिका 2 : श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य

**सहसंबंध**

| चर | N | स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (p) | सार्थकता मान |
|---|---|---|---|
| उपलब्धि अभिप्रेरणा | 150 | 0.1547 | 0.05877 |
| सामाजिक–आर्थिक स्थिति | 150 | | |

स्वतंत्रता अंश (df) = 148

प्राप्त आँकड़ों के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (p) का मान 0.1547 प्राप्त हुआ। सहसंबंध गुणांक का यह मान धनात्मक दिशा को प्रदर्शित करता है।

इसका अर्थ यह है कि श्रवण बाधित छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाता है। अर्थात जिन छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर होती है, उनमें उपलब्धि प्राप्त करने की प्रेरणा का स्तर भी कुछ हद तक अधिक प्राप्त किया जा सकता है।

हालाँकि, सहसंबंध गुणांक का मान 0.1547 यह दर्शाता है कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक संबंध की मात्रा कम है। इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव सीमित स्तर का है। श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा केवल सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अनेक अन्य कारक जैसे व्यक्तिगत रुचि, आत्मविश्वास, पारिवारिक प्रोत्साहन, विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का सहयोग, विशेष शैक्षिक सुविधाएँ तथा व्यक्तिगत प्रयास भी उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित कर सकते हैं।

प्राप्त सार्थकता मान (p मान) 0.05877 है। यह मान 0.05 स्तर के सार्थकता मान से अधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य प्राप्त सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। स्वतंत्रता अंश (df) 148 के आधार पर भी यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि दोनों चरों के मध्य प्राप्त संबंध इतना मजबूत नहीं है कि उसे सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण माना जा सके। अतः यह संभावना बनी रहती है कि प्राप्त धनात्मक संबंध संयोग के कारण भी हो सकता है। इस आधार पर अध्ययन की शून्य परिकल्पना 'श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य धनात्मक लेकिन असार्थक सहसंबंध पाया गया। यद्यपि बेहतर

सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ छात्राओं की शैक्षिक प्रेरणा को बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं, परंतु प्रस्तुत अध्ययन के आँकड़ों के आधार पर यह प्रभाव सांख्यिकीय रूप से पर्याप्त प्रमाणित नहीं हुआ। इसलिए श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास हेतु सामाजिक–आर्थिक सहायता के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक एवं पारिवारिक सहयोग जैसे अन्य कारकों पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

## विवेचना

**कोलमैन (1966)** ने अपने अध्ययन में बताया कि परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों और उपलब्धि व्यवहार को प्रभावित करती है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवार अपने बच्चों को बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ, अध्ययन सामग्री और अभिभावकीय समर्थन प्रदान करते हैं। हालांकि, सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव सभी विद्यार्थियों में समान रूप से दिखाई नहीं देता। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के धनात्मक किंतु असार्थक सहसंबंध का समर्थन करता है, क्योंकि सामाजिक–आर्थिक संसाधन उपलब्धि अभिप्रेरणा को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं, परंतु उनका प्रभाव सीमित हो सकता है।

**बंडूरा (1986)** के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार, विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि आत्म–विश्वास, सामाजिक अनुभवों और व्यक्तिगत प्रयासों से भी प्रभावित होती है। श्रवण बाधित छात्राओं के संदर्भ में परिवार का आर्थिक स्तर उन्हें शैक्षिक अवसर उपलब्ध करा सकता है, लेकिन उनकी प्रेरणा पर आत्म–प्रभावकारिता, शिक्षक सहयोग और सामाजिक स्वीकृति जैसे कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच केवल कमजोर धनात्मक संबंध होना अपेक्षित हो सकता है।

**एक्लेस एट अल. (1983)** के अपेक्षा–मूल्य सिद्धांत के अनुसार, विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उनकी सफलता की अपेक्षाओं और उपलब्ध अवसरों से प्रभावित होती है। सामाजिक–आर्थिक रूप से बेहतर परिवार छात्राओं को अधिक शैक्षिक सहायता एवं प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, जिससे उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि हो सकती है। लेकिन व्यक्तिगत रुचि, क्षमता और विद्यालयी वातावरण के कारण यह प्रभाव हमेशा सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं होता।

भारतीय संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययनों से भी यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति छात्रों के शैक्षिक विकास में सहायक भूमिका निभाती है, किंतु यह उपलब्धि अभिप्रेरणा का एकमात्र निर्धारक नहीं है। श्रवण बाधित छात्राओं के लिए पारिवारिक सहयोग, संचार सुविधा, समावेशी शिक्षा, शिक्षकों का व्यवहार और आत्मविश्वास जैसे कारक सामाजिक–आर्थिक स्थिति

की तुलना में अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं। इसलिए वर्तमान अध्ययन में पाया गया धनात्मक लेकिन असार्थक संबंध पूर्व शोध निष्कर्षों के अनुरूप है।

कुछ अध्ययनों के निष्कर्ष वर्तमान परिणाम से भिन्न पाए गए हैं। इन अध्ययनों में सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य अधिक स्पष्ट एवं सार्थक संबंध पाया गया है। इन शोधों के अनुसार, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों को बेहतर संसाधन, शैक्षिक अवसर और अभिभावकीय प्रोत्साहन प्रदान करती है, जिससे उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि होती है।

**वेंट्जेल (1998)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक समर्थन और सामाजिक संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रेरणा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। उनके अनुसार, जिन विद्यार्थियों को परिवार से अधिक सहयोग और संसाधन प्राप्त होते हैं, वे शैक्षिक लक्ष्यों के प्रति अधिक प्रेरित रहते हैं। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन से भिन्न है, क्योंकि इसमें सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध की अपेक्षा की जाती है।

**हार्टर (1981)** के अध्ययन के अनुसार, विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उनके सामाजिक अनुभवों और उपलब्ध समर्थन से प्रभावित होती है। बेहतर सामाजिक वातावरण और संसाधनों वाले विद्यार्थियों में अधिक आत्मविश्वास तथा उपलब्धि की इच्छा विकसित होती है। इस आधार पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच मजबूत संबंध की संभावना व्यक्त की गई है।

इसी प्रकार, कुछ भारतीय अध्ययनों में पाया गया है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, उच्च शैक्षिक आकांक्षाएँ और अधिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पाई जाती है। आर्थिक रूप से सक्षम परिवार बच्चों की शिक्षा में अधिक निवेश करते हैं, जिससे विद्यार्थियों को सीखने के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। ये निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के विपरीत हैं, क्योंकि वर्तमान अध्ययन में संबंध केवल धनात्मक लेकिन असार्थक पाया गया।

हालांकि, इन विरोधी निष्कर्षों को श्रवण बाधित छात्राओं के संदर्भ में सावधानीपूर्वक समझना आवश्यक है। श्रवण बाधित छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अतिरिक्त संचार क्षमता, पुनर्वास सेवाएँ, विद्यालयी सहायता, शिक्षक का सहयोग और सामाजिक स्वीकृति जैसे कारक भी प्रभाव डालते हैं। इसलिए संभव है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव अन्य कारकों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करता हो।

**$H_03$ : सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति मध्य कोई संबंध नहीं है।**

तालिका 3 : सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सहसंबंध

| चर | N | स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (p) | सार्थकता मान |
|---|---|---|---|
| उपलब्धि अभिप्रेरणा | 150 | **0.2605** | 0.001283 |
| सामाजिक–आर्थिक स्थिति | 150 | | |

स्वतंत्रता अंश (df) = 148

तालिका के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (p) = 0.2605 प्राप्त हुआ है। यह मान धनात्मक है, जो यह इंगित करता है कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसंबंध विद्यमान है। अर्थात जैसे–जैसे विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होता है, वैसे–वैसे उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में भी वृद्धि होने की प्रवृत्ति देखी जाती है। इसी प्रकार अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया जा सकता है।

यद्यपि सहसंबंध गुणांक का मान 0.2605 है, जो अत्यधिक उच्च नहीं है, फिर भी यह दोनों चरों के मध्य निम्न से मध्यम स्तर के धनात्मक संबंध को दर्शाता है। इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है, किन्तु केवल यही कारक उपलब्धि अभिप्रेरणा का निर्धारण नहीं करता। विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर पारिवारिक वातावरण, विद्यालयीय संसाधन, शिक्षक का सहयोग, अभिभावकों का प्रोत्साहन, व्यक्तिगत क्षमताएँ तथा मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ भी प्रभाव डालती हैं।

तालिका में प्राप्त सार्थकता मान (p = 0.001283) है, जो 0.05 तथा 0.01 दोनों स्तरों से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राप्त सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। अर्थात यह संबंध केवल संयोगवश प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि अध्ययन किए गए श्रवण बाधित विद्यार्थियों के समूह में वास्तव में सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सार्थक धनात्मक संबंध विद्यमान है। अध्ययन का स्वतंत्रता अंश (df = 148) भी इस परीक्षण की सांख्यिकीय वैधता को पुष्ट करता है।

इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जिन विद्यार्थियों को परिवार से पर्याप्त आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक सहयोग प्राप्त होता है, उनमें शैक्षिक सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसके विपरीत सीमित संसाधनों वाले परिवारों के

विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रभावित हो सकती है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध विद्यमान है। इसलिए इन विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को बढ़ाने के लिए केवल विद्यालय स्तर पर ही नहीं, बल्कि परिवार एवं समाज स्तर पर भी आर्थिक, शैक्षिक तथा मनोसामाजिक सहयोग उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, आत्मविश्वास तथा समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

## विवेचना

वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष **न्यामे एट अल. (2025)** के अध्ययन से मेल खाता है। उन्होंने श्रवण बाधित विद्यार्थियों पर किए गए अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों की सहभागिता तथा विद्यार्थियों की आत्म–प्रभावकारिता अधिगम अभिप्रेरणा के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक हैं। चूँकि अभिभावकों की सहभागिता प्रायः बेहतर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से जुड़ी होती है, इसलिए उनका अध्ययन इस तथ्य का समर्थन करता है कि अनुकूल सामाजिक–आर्थिक वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है।

इसी प्रकार **परवीन एट अल. (2023)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, शैक्षिक संलग्नता तथा शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण वृद्धि करती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि जिन परिवारों के पास अपेक्षाकृत बेहतर आर्थिक एवं शैक्षिक संसाधन उपलब्ध होते हैं, वे अपने बच्चों को अधिक प्रभावी शैक्षिक सहयोग प्रदान कर पाते हैं। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन का समर्थन करता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

**हाकम एट अल. (2016)** द्वारा किए गए साहित्य समीक्षा अध्ययन ने भी वर्तमान निष्कर्ष का समर्थन

किया है। उनके अनुसार शिक्षक सहयोग, पारिवारिक सहभागिता तथा सहायक शिक्षण वातावरण श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, अधिगम सहभागिता तथा शैक्षिक सफलता को बढ़ाते हैं। यद्यपि इस अध्ययन में प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक–आर्थिक स्थिति का परीक्षण नहीं किया गया, तथापि यह संकेत मिलता है कि बेहतर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ ऐसे सहायक शैक्षिक वातावरण की उपलब्धता को बढ़ाती हैं।

इसी प्रकार **म्वांगी (2011)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सकारात्मक पारिवारिक वातावरण श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। चूँकि पारिवारिक वातावरण का घनिष्ठ

संबंध सामाजिक–आर्थिक स्थिति से होता है, अतः यह अध्ययन भी वर्तमान निष्कर्ष का समर्थन करता है।

सामान्य विद्यार्थियों पर किए गए शोध भी इस निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं। **झांग – झाओ (2023)** ने पी.आई.एस.ए. 2018 के आँकड़ों के द्वितीयक विश्लेषण में पाया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा के माध्यम से प्रभावित करती है। उनके अनुसार उच्च सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों में उपलब्धि प्राप्त करने की प्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक होती है। यद्यपि यह अध्ययन सामान्य विद्यार्थियों पर आधारित था, फिर भी इसके निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के अनुरूप हैं।

इसके विपरीत, कुछ अध्ययनों के निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन से भिन्न पाए गए हैं। **पावर्स (2003)** ने बधिर विद्यार्थियों पर किए गए अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक सामाजिक–आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर सीमित प्रभाव था, जबकि संप्रेषण कौशल, विद्यालय का प्रकार तथा शिक्षण की गुणवत्ता अधिक प्रभावशाली कारक थे। यह निष्कर्ष संकेत करता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा को केवल सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर नहीं समझा जा सकता।

इसी प्रकार **मार्शार्क एट अल. (2015)** ने निष्कर्ष निकाला कि बधिर एवं श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक परस्पर संबंधित कारकों, जैसे भाषा दक्षता, संप्रेषण प्रणाली, संज्ञानात्मक विशेषताएँ तथा विद्यालयीय वातावरण, पर निर्भर करती है। उनके अनुसार सामाजिक–आर्थिक स्थिति इन अनेक कारकों में से केवल एक कारक है।

इसके अतिरिक्त **स्टिन्सन (1984)** ने अपने अध्ययन में यह प्रतिपादित किया कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा पर कक्षा का वातावरण, शिक्षक की अपेक्षाएँ, स्वायत्तता तथा सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया का प्रभाव सामाजिक–आर्थिक स्थिति की तुलना में अधिक हो सकता है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि विद्यालय आधारित कारक भी उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें यह पाया गया है कि बेहतर सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। तथापि, वर्तमान अध्ययन में प्राप्त सहसंबंध गुणांक (p = 2605) अपेक्षाकृत निम्न स्तर का है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण, किन्तु एकमात्र कारक नहीं है। विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को समझने के लिए पारिवारिक सहयोग, शिक्षक का प्रोत्साहन, संप्रेषण कौशल, विद्यालयीय वातावरण, आत्म–प्रभावकारिता तथा अधिगम के अवसरों जैसे अन्य कारकों को भी समान रूप से ध्यान में रखना आवश्यक है।

**$H_04$ : गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य कोई संबंध नहीं है।**

तालिका 4 : गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सहसंबंध

| चर | N | स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (p) | सार्थकता मान |
|---|---|---|---|
| उपलब्धि अभिप्रेरणा | 150 | **0.2176** | 0.007462 |
| सामाजिक–आर्थिक स्थिति | 150 | | |

स्वतंत्रता अंश (df) = 148

तालिका के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध गुणांक (च) = 0.2176 प्राप्त हुआ है। यह सहसंबंध गुणांक धनात्मक है, जो यह संकेत देता है कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक संबंध विद्यमान है। अर्थात जिन विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है, उनमें उपलब्धि प्राप्त करने की अभिप्रेरणा भी अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति कमजोर है, उनमें उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर अपेक्षाकृत कम हो सकता है।

हालाँकि प्राप्त सहसंबंध गुणांक 0.2176 का मान बहुत अधिक नहीं है, फिर भी यह दोनों चरों के मध्य निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है, किन्तु यह अकेला निर्धारक नहीं है। उपलब्धि अभिप्रेरणा पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचि, आत्मविश्वास, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयीय वातावरण, शिक्षकों का मार्गदर्शन, सहपाठियों का सहयोग तथा अन्य मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

तालिका में प्राप्त सार्थकता मान (p = 0.007462) है, जो 0.01 तथा 0.05 दोनों स्तरों से कम है। अतः यह सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसका अर्थ है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य प्राप्त धनात्मक संबंध केवल संयोग का परिणाम नहीं है, बल्कि अध्ययन किए गए गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों में यह संबंध वास्तविक एवं विश्वसनीय है। अध्ययन में स्वतंत्रता अंश (df = 148) होने से परीक्षण की सांख्यिकीय विश्वसनीयता भी सुनिश्चित होती है।

इन परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है। बेहतर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को शैक्षिक संसाधन, अभिभावकीय सहयोग, तकनीकी सुविधाएँ तथा अनुकूल शिक्षण वातावरण अधिक सुलभ होता है, जिससे उनमें सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा विकसित होती है। दूसरी ओर, सीमित आर्थिक एवं सामाजिक संसाधनों वाले विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, जो उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित कर सकती हैं।

अतः प्रस्तुत परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य निम्न स्तर का किन्तु धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध विद्यमान है। इसलिए विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को सुदृढ़ बनाने के लिए विद्यालय, परिवार तथा समाज के स्तर पर सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक सहयोग प्रदान करना आवश्यक है। इससे श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन, आत्मविश्वास तथा समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित किया जा सकता है।

## विवेचना

वर्तमान निष्कर्ष का समर्थन **न्यामे एट अल. (2025)** के अध्ययन से प्राप्त होता है, जिसमें श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मध्य अभिभावकीय सहभागिता, आत्म–प्रभावकारिता एवं अधिगम अभिप्रेरणा के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि जिन विद्यार्थियों को परिवार से अधिक सहयोग एवं शैक्षिक संसाधन प्राप्त होते हैं, उनमें सीखने तथा उपलब्धि प्राप्त करने की प्रेरणा अधिक होती है। चूँकि पारिवारिक सहयोग एवं संसाधनों की उपलब्धता सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित होती है, इसलिए यह अध्ययन वर्तमान निष्कर्ष का समर्थन करता है।

इसी प्रकार **परवीन एट अल. (2023)** ने पाया कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि में अभिभावकों की सहभागिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बेहतर सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति वाले परिवार अपने बच्चों को अतिरिक्त शैक्षिक सहायता, अध्ययन सामग्री तथा भावनात्मक सहयोग प्रदान करने में अधिक सक्षम होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास होता है।

**हाकम एट अल. (2016)** ने अपने अध्ययन में बताया कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के विकास में पारिवारिक सहयोग, शिक्षक समर्थन तथा अनुकूल शिक्षण वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के अनुरूप है क्योंकि सामाजिक–आर्थिक रूप से सक्षम परिवार विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराने में सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त **म्वांगी (2011)** ने श्रवण बाधित विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि सकारात्मक पारिवारिक वातावरण एवं सहयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। यह निष्कर्ष इस बात को बल प्रदान करता है कि सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार एवं अभिप्रेरणा को प्रभावित कर सकती हैं।

हालाँकि कुछ अध्ययन वर्तमान निष्कर्ष से भिन्न परिणाम भी प्रस्तुत करते हैं। **पावर्स (2003)** ने पाया कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव सीमित था तथा भाषा दक्षता, संप्रेषण क्षमता एवं विद्यालयीय वातावरण अधिक प्रभावशाली कारक थे। इस प्रकार यह अध्ययन संकेत करता है कि केवल सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का पूर्ण अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

इसी प्रकार **मार्शार्क एट अल. (2015)** ने बताया कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक कारकों, जैसे भाषा विकास, संप्रेषण प्रणाली, व्यक्तिगत क्षमताएँ, विद्यालयीय व्यवस्था एवं पारिवारिक विशेषताओं के संयुक्त प्रभाव से निर्धारित होती है। उनके अनुसार सामाजिक–आर्थिक स्थिति इन कारकों में से केवल एक कारक है।

**स्टिन्सन (1984)** ने भी यह स्पष्ट किया कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में विद्यालयीय वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, कक्षा की सहभागिता एवं विद्यार्थियों को मिलने वाली स्वतंत्रता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दृ ष्टिकोण वर्तमान निष्कर्ष को आंशिक रूप से चुनौती देता है क्योंकि इसके अनुसार विद्यालयीय कारक सामाजिक–आर्थिक स्थिति की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

समग्र रूप से, वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों के अधिकांश निष्कर्षों के अनुरूप है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि बेहतर आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों को आवश्यक शैक्षिक संसाधन, पारिवारिक सहयोग एवं प्रेरणात्मक वातावरण प्रदान करती हैं। तथापि, प्राप्त निम्न सहसंबंध गुणांक ($\rho = 0.2176$) यह दर्शाता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा का एकमात्र निर्धारक नहीं है। विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर व्यक्तिगत, पारिवारिक, विद्यालयीय एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

## शैक्षिक निहितार्थ

- आर्थिक रूप से कमजोर श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, सहायक उपकरण एवं विशेष शिक्षण सामग्री की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- विद्यालयों में अभिभावक सहभागिता कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- उपलब्धि अभिप्रेरणा विकसित करने हेतु परामर्श सेवाएँ, लक्ष्य निर्धारण कार्यक्रम तथा प्रेरणात्मक गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।
- समावेशी एवं सहयोगात्मक विद्यालयी वातावरण विकसित किया जाना चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सामाजिक–आर्थिक विविधताओं के प्रति संवेदनशील शिक्षण रणनीतियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य सामान्यतः धनात्मक संबंध विद्यमान है, किन्तु इसकी तीव्रता विभिन्न समूहों में भिन्न–भिन्न है। छात्रों तथा सरकारी एवं गैर–सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य यह संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक प्राप्त हुआ, जबकि छात्राओं में यह संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, परंतु यह इसका एकमात्र निर्धारक नहीं है। उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास हेतु पारिवारिक सहयोग, विद्यालयीय वातावरण, शिक्षक का प्रोत्साहन, आत्म–प्रभावकारिता तथा मनोवैज्ञानिक समर्थन जैसे कारकों पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


- बंडूरा, ए. (1986). सोशल फाउंडेशन्स ऑफ थॉट एंड एक्शनः ए सोशल कॉग्निटिव थ्योरी। प्रेंटिस–हॉल।
- कोलमैन, जे. एस. (1966). इक्कैलिटी ऑफ एजुकेशनल अपॉच्युनिटी। यू.एस. गवर्नमेंट प्रिंटिंग ऑफिस।

- डेसी, ई. एल., एवं रायन, आर. एम. (1985). इंट्रिसिक मोटिवेशन एंड सेल्फ–डिटरमिनेशन इन ह्यूमन बिहेवियर। प्लेनम प्रेस।
- एक्लेस, जे. एस., एडलर, टी. एफ., फटरमैन, आर., गॉफ, एस. बी., काजाला, सी. एम, मीस, जे. एल., एवं मिडग्ले, सी. (1983). एक्सपेक्टेन्सीज, वैल्यूज, एंड अकादमिक बिहेवियर्स। जे. टी. स्पेंस (सम्पा.), अचीवमेंट एंड अचीवमेंट मोटिव्स (पृ. 75–146)। फ्रीमैन।
- *हाक्मा, आई, जान्सेन, एम., एवं मिन्नार्ट, ए. (2016). सेल्फ–डिटरमिनेशन थ्योरी इन डेफ एंड हार्ड–ऑफ–हियरिंग स्टूडेंट्सः ए लिटरेचर रिव्यू। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिसएबिलिटी, डेवलपमेंट एंड एजुकेशन, 63(6), 639–6561*
- *हार्टर, एस. (1981). ए मॉडल ऑफ मास्टरी मोटिवेशन इन चिल्ड्रेनः इंडिविजुअल डिफरेंसेज एंड डेवलपमेंटल चेंज। मिनेसोटा सिम्पोजियम ऑन चाइल्ड साइकोलॉजी, 14, 215–2551*
- *जगताप, पी. (2015). प्रेडिक्टर्स ऑफ अर्ली एडोलसेंट गर्ल्सश अचीवमेंट मोटिवेशन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 3(1)1*

  *https://doi.org/10.25215/0301.033*
- *मार्शार्क, एम., शेवर, डी. एम., नेगल, के. एम., एवं न्यूमैन, एल. ए. (2015). प्रेडिक्टिंग द अकादमिक अचीवमेंट ऑफ डेफ एंड हार्ड–ऑफ–हियरिंग स्टूडेंट्स फ्रॉम इंडिविजुअल, हाउसहोल्ड, कम्युनिकेशन, एंड एजुकेशनल फैक्टर्स। एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन, 81(3), 350–3691*
- *म्वांगी, जे. जी. (2011). फैक्टर्स इन्फ्लुएंसिंग अकादमिक परफॉर्मेंस ऑफ पुपिल्स विद हियरिंग इम्पेयरमेंट इन स्पेशल प्राइमरी स्कूल्स इन सेंट्रल प्रोविंस, केन्या (मास्टर्स थीसिस, केन्याटा यूनिवर्सिटी)।*
- *न्यामे, एफ., इस्सा, एम., मांटे, ई., अडजेई, एम., एवं बापेंग, जी. (2025). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट, सेल्फ–एफिकेसी, एंड लर्निंग मोटिवेशन अमंग स्टूडेंट्स विद हियरिंग इम्पेयरमेंट। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 16, आर्टिकल 17051331*
- *परवीन, एस., काशिफ, एम., एवं अब्बास, एस. (2023). इम्पैक्ट ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट ऑन द मोटिवेशन एंड अकादमिक अचीवमेंट ऑफ हियरिंग इम्पेयर्ड स्टूडेंट्स। जर्नल ऑफ डेवलपमेंट एंड सोशल साइंसेज, 4(2), 1–151*
- *पावर्स, एस. (2003). इन्फ्लुएंसेज ऑफ स्टूडेंट एंड फैमिली फैक्टर्स ऑन अकादमिक आउटकम्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स हू आर डेफ। जर्नल ऑफ डेफ स्टडीज एंड डेफ एजुकेशन, 8(1), 57–781*
- *स्टिन्सन, एम. एस. (1984). मोटिवेशन ऑफ हियरिंग इम्पेयर्ड स्टूडेंट्सः रिव्यू ऑफ रिसर्च। जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 18 (2), 229–2411*
- *वेंत्जेल, के. आर. (1998). सोशल रिलेशनशिप्स एंड मोटिवेशन इन मिडिल स्कूलः द रोल ऑफ पैरेंट्स, टीचर्स, एंड पीयर्स। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 90(2), 202–2091*

  *https://doi.org/10.1037/0022-0663.90.2.202*
- झांग, वाई, एवं झाओ, एक्स. (2023). सोशियोइकोनॉमिक स्टेटस, अकादमिक मोटिवेशन, एंड स्टूडेंट अचीवमेंटः एविडेंस फ्रॉम पीसा 2018। लार्ज–स्केल असेसमेंट्स इन एजुकेशन, 11(1), आर्टिकल 15।